सुधा गोयल

२९०-ए, कृष्णानगर, डॉ. दत्ता लेन, बुलंदशहर -२०३००१

बिट्टू क्यों उदास है

पता नहीं बिट्टू को क्या हो गया है।न तो उसका मन पढ़ाई में लगता है,न घर में।इस बार मंथली रिपोर्ट भी अच्छी नहीं है।मिस ने क ई रैड रिमार्क दिए हैं।नीचे कमेंट्स भी दिया है - "आप बच्चे पर ध्यान नहीं देंतीं।आपका बच्चा कक्षा में पिछड़ रहा है।"

मम्मी पापा और अम्मा सभी उसको लेकर परेशान हैं किसी काम के लिए कहो तो बेमन से करेगा एक काम करेगा दो बिगाड़ेगा ।हमेशा मम्मी और अम्मा की डांट खाता रहता है। मम्मी तंग आकर पापा से शिकायत कर देती हैं ।ऑफिस से थके हारे लौटे पापा उसकी शिकायत सुन एकदम चीख उठते हैं। वह सहम जाता है।पापा डांट कर बुलाते हैं -

"बिट्टू ,इधर आओ,आजकल तुम बहुत शैतान हो गये हो।अपनी मम्मी को तंग करते हो। होमवर्क भी ठीक से नहीं करते।"

डांट सुनते ही उसका निकर गीला हो जाता है।फिर पापा कान उमेठ देते हैं कितने जोर से।पापा के हाथ है या लोहे के चिमटे।कान कितना दुखता है।एकदम लाल पड़ जाता है।दर्द के कारण वह जोर जोर से रोने लगता है।वह रोते रोते उल्टी भी कर देता है।तब पापा और जोर से डांटते हैं।

फिर मम्मी ही उठकर चुप कराती है।मुंह धुलाती है।आंख नाक पोंछती है।गोद में सिर रखकर बाल सहलाती है।समझाती भी जाती है -"बिट्टू इतना अच्छा लड़का है।क्या ऐसे रोता है।?"

"आपने पापा से शिकायत क्यों की?"वह रोते -रोते पूछता है।

"तुम तंग क्यों करते हो?"मम्मी ने प्यार से उसके आंखों में झांका।

"आप मेरे साथ क्यों नहीं खेलती हो? मुझे प्यार क्यों नहीं करतीं? अपने पास क्यों नहीं सुलातीं?अम्मा सारा दिन काम करवाएंगी या डांटेंगी।"-मम्मी चुपचाप सुनती रहती है। फिर प्यार से छाती से चिपटा लेती हैं।

"अब राजा बेटा को कोई नहीं डांटेगा।काम भी नहीं कराएगा।मैं अम्मा से मना कर दूंगी।थोड़े दिन बाद मैं फिर से तुम्हारे साथ खेलूंगी। हां तुम्हारे साथ खेलने के लिए एक छोटी सी गुड़िया सी बहिन आ जाएगी। फिर सारा दिन उसके साथ खेलना।"

बिट्टू अपना रोना भूल गया।कौतूहल से बोला-"मम्मी मेरी बहिन आएगी, कहां से आएगी?कब आएगी?"

"थोड़े दिन बाद आएगी बेटा"।

"अभी क्यों नहीं आती मेरी बहन?मैं उसे देखूंगा, उसके साथ खेलूंगा"-वह फिर जिद्द करने लगा।

"अभी कैसे आ सकती है।अभी बहुत छोटी है इतनी सी"-मम्मी ने हाथ के इशारे से उसे समझाना चाहा।

"आपने देखा है उसे?"

"हां"-मम्मी ने गर्दन हिलाई।

"कैसी है वह?"

"बिल्कुल तुम्हारे जैसी।"

"नहीं , मुझे अपने जैसी नहीं,आशु की बहिन जैसी चाहिए।मैं भी आशु की तरह उसकी चोटी खींचूंगा,फ्राक गंदी

करुंगा,रिबिन खोलूंगा।"

"अच्छा भ ई जैसे मन आए करना"-मम्मी ने सहलाते हुए प्यार से कहा।

*मम्मी, मुझे अपनी गोद में सुलाओ न"-ठिनका बिट्टू।

"यहां पेट में तुम्हारी बहिन है"-मम्मी ने समझाना चाहा।

"मम्मी,क्या तुमने मेरी बहन को खा लिया है?"-मम्मी बताने की जगह खीज उठती हैं।

"बहुत सवाल करने लगा है।चल उठ।अपनी बाईसिकिल से खेल।मैं तुम्हारे पापा के लिए चाय बना दूं।"

मम्मी उसके पास से उठकर धीरे-धीरे रसोई में चली जाती है।वह जाती हुई मम्मी को देखता रहता है। फिर उठकर बाहर बरामदे की सीढ़ियों पर जाकर बैठ जाता है।उसे अपनी मम्मी कितनी गंदी लगती है।जाने कैसी हो गई हैं। कैसे धीरे धीरे चलती हैं। नीचे कुछ गिर जाए तो उठा भी नहीं सकतीं। आवाज लगाती हैं -"बिट्टू,जरा पिन उठा दे।"

तब उसका मन करता है कि कहे-"मैं नहीं उठाता। अपने आप उठा लो।आप तो बड़ी हो।मैं छोटा हूं। सारे दिन दौड़ते दौड़ते थक जाता हूं।"लेकिन मम्मी की डांट से बचने के लिए काम कर देता हूं।अम्मा भी बैठे बैठे आवाज लगाएंगी-"बिट्टू ,जरा एक गिलास पानी दे जा।"

अम्मा क्यों अपने आप पानी लेकर नहीं पी सकती।सारे दिन बैठी रहती है।मम्मी को अपना काम भी करना पड़ता है।गिलास इतने ऊंचे रखें होते हैं कि उसके छोटे छोटे हाथ वहां तक पंहुच नहीं पाते।वह पहले छोटा स्टूल खिसकाता है। फिर उस पर चढ़ कर गिलास उतारता है।तब अम्मा को पानी देता है।उस दिन गिलास उतारते हुए हाथ पास रखें टी सैट को लग गया था और दो प्याले गिर कर टूट गये थे।वह भी हड़बड़ाहट में स्टूल से गिर गया था।अम्मा और मम्मी दौड़ी आई थीं।उसे गिरे देखकर मम्मी ने उठाया था।

"अम्माजी आप भी हद करती हैं। पानी लेकर आप स्वंय भी पी सकती हैं।ये भी गिरा और बर्तन भी टूटे।यदि इसे चोट लग जाती तो...."

मम्मी बांह पकड़ कर कमरे में ले गईं थीं।बिस्तर पर बिठा तौलिए से हाथ पैर पूछे थे।उसे मम्मी को यूं अम्मा को डांटना अच्छा लगा था।और वह थोड़ा रोकर चुप हो गया था।रैंक से अपनी बाॅल उतार कर बोला-"मम्मी ,मैं लाॅन में खेल आऊं।"

"हां जाओ खेलों,पर फूल मत तोड़ना।"

"अच्छा मम्मी "-कहकर वह दौड़ता हुआ लाॅन में चला गया।उसने बाॅल को हल्की सी किक मारी और बाॅल लुढ़कती हुई फूलों की क्यारी के पास पंहुच गई।तभी उसने एक खूबसूरत सी तितली को फूल पर बैठे देखा।उसने तितली पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया,पर तितली फुर्र से उड़ कर दूसरे फूल पर बैठ गई।वह फिर उस फूल तक पहुंचा। तितली उड़ती कभी किसी फूल पर कभी किसी पत्ते पर।इस खेल में बिट्टू को बड़ा आंनद आने लगा।खेलते खेलते वह थक गया और तितली बहुत दूर एक ऊंचे फूल के गुच्छे पर बैठ गई।

वह थककर बरामदे की सीढ़ियों पर बैठ गया।तभी उसे मम्मी की उलटी करने की आवाज आई।वह अंदर दौड़ा। उसने जल्दी से गिलास में पानी भरा।मम्मी के पास रखा और अपने दोनों हाथों से मम्मी की पीठ सहलाने लगा।जब मम्मी को उल्टी होती है पापा भी ऐसे ही करते हैं।

मम्मी कुल्ला करके अंदर जाकर लेट गई। उसने मग से पानी डाल कर उल्टी बहा दी। फिर मम्मी के सिरहाने बैठकर उनका सिर सहलाने लगा।मम्मी की आंखों से आंसू बहने लगे।

"मम्मी रोओ मत।जल्दी अच्छी हो आओगी।"उसने अपनी शर्ट से मम्मी के आंसू पोंछे। फिर झट चूरन की शीशी उठाकर मम्मी को दी।

"मम्मी चूरन खा लो"-उसे मालूम है कि मम्मी अक्सर यह चूरन खाती है। उसने भी क ई बार चुपके से चूरन चखा है।कितना अच्छा है।उसका मन भी चूरन खाने को करता है।

मम्मी ने प्यार से सहलाकर उसका सिर अपनी छाती पर रख लिया है।मन होता है कि वह मम्मी की गोद में सिमटकर या खूब अच्छी तरह चिपटकर सोए। लेकिन वह सो नहीं पाता।मम्मी उसे अलग बिस्तर पर सुलातीं हैं।उसे अलग सोना अच्छा नहीं लगता। उसे कितना डर लगता है कभी सपने में छवरीली बिल्ली दिखाई देती है कभी शेर कुत्ता तो कभी बंदर इसीलिए चीख कर रो पड़ता हैतब पापा थपकी देकर सुनते हैं अपने से चिपकाते भी हैं और पापा के हाथ कितने सख्त हैं पापा के साथ लिपटकर सोना भी अच्छा नहीं लगता पापा को ना कोई कहानी आती है ना लोरी। जिद्द करने पर हर बार वही दो बिल्ली एक बंदर की कहानी या चंदा मामा दूर के बाल गीत। पापा को गाना भी नहीं आता कैसी मोटी और भद्दी आवाज है। थपकी देंगे तो लगेगा जैसे पीट रहे हो। कोई समझता ही नहीं की मम्मी के पास ही सोना अच्छा लगता है।मम्मी के पास सोने के लिए कहता हूं तो पापा कहते हैं बिट्टू अब बड़ा हो गया है ।बस सोने के लिए ही बड़ा हुआ हूं। मै कल स्कूल में पिंकी से सब पूछूंगा क्या वह भी पापा के पास सोई थी जब उसका छोटा भाई आया था।

यह छोटे भाई बहन क्यों आते हैं उसने तो मम्मी से कभी कहा नहीं की एक बहन चाहिए। फिर भला मम्मी को क्या जरूरत पड़ी। मम्मी भी खूब है ढेर सारी साड़ियां है फिर भी लाती रहेगी ।पापा कहते हैं मणी क्या दुकान खोलने का इरादा है ।मम्मी चुप हो जाती है। बस ऐसे ही मम्मी एक और बच्चा ला रही है। पता नहीं इन मम्मी को फालतू सामान इकट्ठा करना क्यों अच्छा लगता है। पापा इन्हें डांटते क्यों नहीं उसी को क्यों डांटते हैं?

पिंकी को अपना भाई जरा भी अच्छा नहीं लगता। भाई के कारण वह उदास रहती है। उसकी मम्मी सारा दिन उसके भाई के पास लेटी रहती हैअब पिंकी को कोई भी जरा भी प्यार नहीं करता। सब उसके भाई को गोद में लेते हैं लेकिन जब पिंकी लेटती है तो उसे डांट पड़ती है। उसकी मम्मी कभी उससे नैपकिन मंगवाती है। कभी दूध की बोतल धुलवाती है। हां एक दिन स्कूल में पिंकी कितना रोई थी। रोते-रोते कहा था-

"बिट्टू जब तेरी बहन आ जाएगी तो तेरी मम्मी भी मेरी मम्मी की तरह करेंगी।

पिंकी की बात सुनकर वह भी उदास हो गया था अभी कौन उसे प्यार करता है मम्मी बात बात पर कहती हैं तेरी हड्डी पसली तोड़ दूंगी तूने मेरा खून पिया है।

खून कैसे पीते हैं उसने पिंकी से पूछा था। पिंकी को भी नहीं मालूम। वे दोनों तो यह भी नहीं जानती की हड्डी पसली क्या होती है। कल मैडम से पूछेगा यह सब सोचकर उसने पास से थोड़ी सी घास थोड़ी और एक-एक तिनका का निकाल कर फेंकने लगा।

रात को पापा ने दरवाजा बंद किया तो बिट्टू ने कहा-" पापा आप दरवाजा बंद मत करिए मेरी बहन आती होगी"।

पापा हंस पड़े-" अरे मेरे राजा बेटा की बहन रात में नहीं दिन में आएंगी। हम लेकर आएंगे। पापा ने उसका मुंह चूमते हुए कहा।

" कहां से पापा?"

"अस्पताल से"

"बहन अस्पताल में क्या कर रही है पापा?"

"सो रही है"- पापा ने समझाना चाहा

"जगने पर खूब रोएगी ना" "हां"

"तो आप अभी ले चलिए। मैं देखूंगा। मैं भी आपके साथ चलूंगा।" "अब सो जाओ राजा बेटे तुम्हारी बहन डॉक्टर के पास है".

"क्या डॉक्टर के पास बहुत सारी बहनें हैं ?"-उसने पूछा

"हां"

"और भाई भी है। फिर आप मेरे लिए बहन क्यों ला रहे हैं भाई क्यों नहीं?"

"भाई तो तुम हो"- पापा ने प्यार से समझाया। पूरी रात सपने में उसे बहन दिखाई देती रही

अगले दिन मम्मी की तबीयत खराब हो गई। मम्मी को पापा डॉक्टर के पास ले गए ।उस दिन उसे विश्वास हो गया कि आज मम्मी बहन को लेकर अवश्य आएंगी। वह रो रो कर स्कूल गया। स्कूल में भी उदास रहा। जरा भी पढ़ाई में मन नहीं लगा। अम्मा ने तो ठीक से कपड़े भी नहीं पहनाए हैं, ना जूते पॉलिश किए ।टाई कैसे गले में छूल रही है ।कितना गंदा लग रहा है। पिंकी ने कितना चिढ़ाया है उसे। उसने भी उसे गुस्से में काट लिया है। दर्पण के हाथ से खून बहने लगा है। मिस उसे एक चांटा मारा है और कोने में खड़ा कर दिया है।

वह उदास उदास घर लौटा है सीढ़ियों से चढ़ते हुए फिसल गया है ।उसका बस्ता लुढ़क गया है। कुहनी छिल गई है। खून निकल रहा है। उसने चारों तरफ देखा है। गिरने की आवाज सुनकर कोई भी उसे उठाने नहीं आया है ।उसका मन हुआ कि वह जोर जोर से रोए, लेकिन अपने पास किसी को न पाकर उसने रोने का विचार छोड़ दिया।

बिट्टू को लगता है कि इस सब की जड़ उसकी आने वाली बहन है। मम्मी इसलिए परेशान है। अम्मा सारा दिन खाली बैठी रहती हैं। क्या उसके लिए एक बहन भी नहीं ला सकती ।बस सारा काम मम्मी ही करेंगी। फिर उसे मम्मी पर गुस्सा आता है ।जो बहन आने से पहले इतना परेशान कर रही है वह बहन नहीं चाहिए। आ जाए बहन वह उसे खूब मारेगा। उठाकर घर से बाहर फेंक देगा। मम्मी पापा को गोद में नहीं लेने देगा ।स्वयं भी नहीं लेगा। अम्मा चाहे रखें अपने पास।

पर अम्मा क्या रख पाएंगी। मम्मी को ही उसके सारे काम करने पड़ेंगे। वह उसकी हड्डी पसली तोड़ देगा। उसका खून पी जाएगा ।उसने अपनी कुहनी का जरा सा खून चखकर देखा ।बुरा सा मुंह बनाकर जमीन पर थूक दिया बिट्टू ने। फिर अपनी कुहनी से निकलते खून को देखा। उसे खून देखकर बहुत डर लगता है। जोरो से रुलाई आने को हुई। फिर उसने अपना बस्ता उठाया धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़कर अंदर पहुंचा। घुसते ही पापा मिल गए।

"मणी बिट्टू स्कूल से आ गया है "-कह कर पापा ने उसका बस्ता पकड़ना चाहा बिट्टू ने अपनी कुहनी आगे कर दी - "लो तुम सब मेरा खून पियो ।मेरी हड्डी पसली तोड़ो"- सुनकर पापा देखते रह गए। कमरे में पहुंच जमीन पर बस्ता फेंक बिस्तर में पड़कर रोने लगा-" मुझे बहन नहीं चाहिए";" मुझे बहन नहीं चाहिए, मुझे बहन नहीं चाहिए"।